भूमिका ॥

दूसरा आहार कभी न
ेट न भरे ॥
और कामचेष्टा

भारतवर्ष में सदा से पुरुषों की भांति स्त्रियां भी पढ़ती लिखती थीं काव्य व्याकरण साहित्य गणित आदि अनेक विद्याओं में निपुण होकर सभाओं में बड़े बड़े पण्डितों से विजय प्राप्त करतीं और बालपोषण बालशिक्षा गृहप्रबन्धादि में चतुर हो नारीधर्म का यथावत् पालन करके गृहस्थसुख को बढ़ातीं थीं, इसी कारण यह देश शारीरिक,आत्मिक और सामाजिक उन्नतिमें संसार-शिरोमणि बना हुआ था, महाभारत के पीछे जब से मुसल्मानों का राज हुआ और उन्होंने बलात्कार इस देश की कुलीन बहू बेटियों का धर्म भ्रष्ट करना आरम्भ किया तो बुद्धिमानों ने धर्मरक्षा के लिये स्त्रियों को परदे में छिपाने और बाल्यविवाह की रीति प्रचलित कर दी, धीरे धीरे यह कुरीति ऐसी प्रबल हो गई कि लाखों विपत्तियां भोगने पर भी लोग इस को नहीं छोड़ते स्त्रियों के विद्याहीन होने का भी यही मुख्य कारण है। परन्तु कुछ दिनों से श्रीमती महाराणी राजराजेश्वरी भारतजननी के प्रताप से इस देश के भाग्योदय हुए जो अनेक कलाकौशल वा विद्या की उन्नति हुई और शिक्षितपुरुषों का ध्यान स्त्रीशिक्षा की ओर हुआ जिस से इन अन्नपूर्णाियों के उद्धार की आशा हो सकती है। जो लोग लड़कियों के पढ़ाने को बुरा जानते थे आज कल वे भी अपनी पुत्रियों के पढ़ाने का यत्न करते हैं, इस लिये मैंने भी यह पुस्तक निज स्वामी की सहायता से बनाई है। अध्यापिकाओं को उचित है कि इस द्वितीयभाग की प्रत्येक शिक्षा बालकों को भली भांति समझा कर पढ़ावें और इनके लिखने का अभ्यास करावें जिस से बहुत सी शिक्षा लड़कियों को याद होकर लिखने की शक्ति भी बढ़ जावगी ॥

यह पुस्तक श्रीयत् विद्योन्नतिकारक प्रजापालक श्रीमान् जे० सी० मैकेनॅन साहब बहादुर सुपरिन्टेन्डेन्ट ज़िला नाराँको समर्पण की गई है ॥

रीसुदशाप्रवर्त्तक ॥

पहिला अध्याय ॥

शारीरिक शिक्षाओं के बयान में।

१ प्रातःकाल के उठने से आरोग्यता मिलती और बुद्धि भी तीव्र होती है परन्तु रात को बहुत जागना भला नहीं ॥

२ हे पुत्रियो ! अपने हाथ मुंह धोकर या स्नान करके इतना भोजन खाओ जो पच जावे अधिक खानेसे शरीर में पीड़ा हो जाती है॥

३ कभी धूल मिट्टी में मत खेलो न द्वन्द मचाओ और ऐसा खेल भी मत खेलो जिस में चोट फेट का डर हो ॥

४ कभी मिट्टी कोयला खाने या रोने मचलने की वान मत सीखो ॥

५ जब तुम्हारे मा बाप तुम को कोई दवा पिलावें तो तुरन्त पीलो इस से तुम्हारा रोग जाता रहेगा ॥

६ गली कूंचे में कूदती हुई या नंगी उघाड़ी मत फिरो, सीधी तरह अपना रास्ता देखती हुई चली जाओ ॥

७ जिस पदार्थ के खाने को माता पिता मना करें उसे कभी मत खाओ क्योंकि उस में कोई बुराई अवश्य होगी ॥

८ काजल डलवाने या सिर बंधवाने में रोना या हट करना नहीं चाहिये ॥

९ जिस चीज़ को तुम खाती हो पहिले यह देखलो कि उसमें मिट्टी तिनका या कोई कीड़ा मकौड़ा तो नहीं पड़ा है ॥

१० एक आहार जब तक न पच जाय तबतक दूसरा आहार कभी न खाना चाहिये और अतिभूख में पानी से पेट न भरै ॥

११ भोजन कर के तुरन्त न्हाना या परिश्रम करना और कामचेष्टा सब रोगकारक हैं ॥

१२ पसीना निकलते हुए, थके हुए और रोगी को, स्नान करना अच्छा नहीं होता ॥

१३ अधिक खटाई, मिठाई, पक्वान्न और कच्चे फल, गतरस या बासी भोजन खाना हानिकारक होता है ॥

१४ प्रातःकाल उठते ही शीतल जल, सन्ध्या समय दूध, भोजन के पीछे मट्ठा (छाछ या तक्र) पीना बड़ा गुणकारी है ॥

१५ रात को खाट पर जाने से पहिले अपने हाथ पांव धो लिया करो और ६ घंटे से कम या ८ घंटे से अधिक सोना नहीं चाहिये ॥

१६ छत पर चढ़ कर दौड़ना और आकाश की ओर असावधानी से देखना कभी न चाहिये ॥

१७ अपने किसी फोड़े फुन्सी को मत खुजलाओ क्योंकि खुजलाने से वह बढ़ कर अधिक दुःख देगा ॥

१८ किसी कैंची चाकू या कांच की चीज़ को मत छुओ उस से हाथ पांव में घाव होने का डर है ॥

१९ अपने कपड़ों को मैला मत करो, कभी थूक या रैंट से न सानो और चायना फाड़ना भी न चाहिये, नहीं तो सब लोग तुम से घिन करेंगे और फिर कभी तुम को सुन्दर कपड़ा भी नहीं मिलेगा ॥

२० नियत समय पर सोना खाना न्हाना मलमूत्रादि त्याग करना और साधारण भोजन में रुचि रखना मनुष्य को आरोग्य, बुद्धिमान् धनवान् कीर्तिमान् बनाता है ॥

२१ अधिक भोजन से कोई बलवान् नहीं हो सकता वरन अधिक पचाने से होताहै जैसा अधिक कथा और धर्मशास्त्र सुनने से धर्मात्मा नहीं होता किन्तु धर्मानुसार चलने से होता है ॥

२२ शरीर को निरोग रखने के लिये परहेज़, चित्त के आरोग्य रखने को सत्य और आत्मा की शुद्धि को विद्या से बढ़कर दूसरी औषधि नहीं है ॥

२३ कैसा ही स्वाद और बढ़ का भोजन हो परन्तु विना भूख खाने से विकार ही करता है ॥

२४ भोजन पाने सोने बैठने आदि के स्थानों को सदा लीपपोत कर स्वच्छ रक्खो, यह काम चाहे आप करो या नौकरों से कराओ ॥

२५ अपने मकान में किसी ऐसी ठौर कूड़ा या जूठन मतडालो जो सड़कर दुर्गन्ध पैदा करे ॥

२६ शरीर में तेल या उबटना मल कर स्नान करने से सब अंग पुष्ट होते हैं, शरद काल में बहुत ठण्डे जल से या गर्मदिनों में अधिक उष्ण पानी से न्हाना या गर्म पानी शिर में डालना बहुत हानि करता है ॥

२७ सुबह शाम और भोजन करने के पीछे, स्वच्छ जगह में थोड़ी देर टहलने से भोजन अच्छे प्रकार पचता है ॥

२८ विदेश में किसी अनजान मनुष्य या शत्रु के हाथ का भोजन नहीं करना चाहिये क्योंकि बहुधा दुष्ट लोग नशे या विषादि खिला कर अपना मतलब बनाते हैं ॥

२९ जो अधिक औषधि खाने में रुचि रखती है या आलस्य में प्रीति करती है वह सदा रोगिणी रहेगी ॥

३० मलमूत्र के वेग को किसी दशा में भी न रोकना चाहिये क्योंकि इस से कई प्रकार के रोग होजाते हैं ॥

३१ बालकों को अफ़ीम या और कोई नशीली चीज़ देना बड़ी बुराई है इस से कभी धोखा भी उठाना पड़ता है ॥

३२ परिमाण से अधिक न्हाना, खाना, सोना, बोलना, हंसना, चलना और जागना सब ही दुःखदाई हैं ॥

३३ जिस जल में कूड़ा करकट पड़ा हो, या कीड़े पड़े हों और जो कुए नाबदानों के पास हों उनका पानी कभी न पीना चाहिये ॥

३४ चार बातों से बुढ़ापा जल्दी आता है अर्थात् विषयलालसा, ऋण का सन्देह, वैरियों की अधिकता और शारीरिक रोग से ॥

३५ आदि में मीठी मध्य में खट्टी नमकीन और पीछे से कड़ुई चरपरी चीज़ भोजन करना लाभदायक है ॥

३६ दिन में सोने से एक तो समय वृथा जाता है, मन उदास रहताहै, शरीर आलसी होता है और बुद्धि भी मलीन होजाती है ॥

३७ खाने और भोजन बनाने के वर्तन सदा स्वच्छ और पवित्र रहने चाहियें और भोजन करने का स्थान लिपा पुता पाकशाला से अलग होना चाहिये ॥

३८ दांतों को दांतौन या मंजन से सदा स्वच्छ रखना चाहिये ॥

३९ मांस मदिरा खाना पीना इसलिये महापाप है कि उससे दया धर्म और आरोग्यता का नाश होजाता है ॥

४० अत्यंत छोटे बालकों को गोद में लेकर किसी चौड़ी स्वच्छ जगह में हवा खिलाना चाहिये ॥

४१ मूर्ख वैद्य से चिकित्सा कराना और स्वार्थी पाखण्डी पण्डित साधू का उपदेश सुनना विष के बराबर है ॥

४२ रहने के मकान सदा हवादार चूने या खरिया मट्टी से पुते हुए होने चाहियें ॥

४३ प्रत्येक गृहस्थी को वायुशुद्धि के लिये प्रातःकाल और सन्ध्या समय हवन अवश्य कर्तव्य है ॥

४४ जब कपड़ों से पसीने आदि के कारण दुर्गंध आने लगें तो उन को बदल लिया करो ॥

४५ जब किसी बड़े या बालक को किसी प्रकार का शारीरिक खेद हो तो हकीम या किसी चतुर स्त्री से औषधि कराना चाहिये झाड़ा फूकी के जाल में पड़ कर धन और धर्म खोना नहीं चाहिये ॥

४६ गर्भवती स्त्री को रोना पीटना, लड़ाई झगड़ा, दौड़ना, भारी बोझ उठाना, परदेश जाना, सूने स्थान में रहना, भूखी रहना, कुरूप और अंगहीन का ध्यान करना, विकारी भोजन खाना इत्यादि महा हानिकारक हैं ॥

४७ बालकों को दूध पिलाने भोजन खिलाने का समय नियत करके भूख के अनुसार आहार देना चाहिये जिस से उन की आरोग्यता बनी रहे ॥

४८ बालकों के पालन पोषण और खिलाने के हेतु यदि कोई सेवक या टहलनी रहे तो बहरी, गूंगी, हकली, तोतली, रोगी, अंगहीन, क्रोधी, अतिलोभी, मूर्ख, कर्कशा, मलीन, आलसी और कुरूप न हो ॥

४९ नदी तालाब आदि अनजाने जल में घुसना और उनके किनारे नंगी उघाड़ी बैठ कर स्नान करना बड़ी बुराई है ॥

५० जब तक बालक के दांत न निकलें तब तक अन्न न खिलाना और जब तक कमर की हड्डी (रीढ़) मजबूत न हो व अपने आप खड़े होने की चेष्टा न करे उसको खड़ा करके न चलाओ ॥

५१ रजस्वला स्त्री को वात, शीत, चिन्ता, भय, शोकादि से अवश्य बचना चा॰ इस के विकार से अनेक रोग हो जाते हैं जिन को मूर्ख भूत पलीत की छाया समझ कर अधिक दुःख उठाती हैं ॥

५२ आग तापने के समय अपने वस्त्रों को अच्छे प्रकार सम्हाल कर बैठो क्योंकि बहुधा लड़कियां असावधानीसे अपने कपड़े फूंक लेतीहैं।

५३ किसी तोतले या हकले मनुष्य की बोली बना कर मत बोलो नहीं तो उसी प्रकार तुम्हारी बोली हो जायगी ॥

५४ बहुधा लड़कियां जब खाली बैठती हैं तो अपने नाखूनोंको चाबती धरती को कुरेदतीं, तिनके तोड़ती और नाक कान आदि अंगो को मलती हैं यह सुब कुलक्षण हैं ॥

५५ जब तुम रात को सोती हो तो अपने कपडों को अच्छी जगह सम्हाल कर रक्खो जिससे खराब न हों और दूसरे दिन ढूंढ़ने भी न पड़ें ॥

५६ जब तुम्हारा कोई कपड़ा फट जाय, या कहीं से उधड़ जाय, तो उस को तुरन्त सी लो जिस से अधिक न फटे ॥

५७ अपने छल्ले अंगूठी आदि गहनों को बड़ी सावधानी से रक्खो जो खोये न जांय क्योंकि गहना पाना बड़ी कठिनाई से मिलता है।

५८ जो प्रातःकाल उठ कर नित्यकर्म्म से निबट जाओगी तो दिनभर आनन्द में कटेगा नहीं तो सारे दिन उदासी रहेगी और दारिद्र्य घेरेगा ॥

५९ जो परिश्रम करके काम करोगी तो परमेश्वर मनोरथ सिद्ध करेगा और शरीर चंगा रहेगा ॥

६० परिश्रम एक कल्पवृक्ष है जो सब प्रकार के मीठे स्वाद और गुणदायक फल देता है ॥

६१ किसी रोगी का कपड़ा पहरना, या जूठा भोजन करना नहीं चाहिये क्योंकि बहुधा रोग छूने से लग जाते हैं ॥

६२ प्राणी का जीवन वायु से होता है इसलिये सदा स्वच्छ पवन का सेवन करो ॥

६३ कपड़ों से मुंह बन्द करके छोटे बालकों सहित जो सोती हैं उन को सांस की वही गंदी वायु बार बार खानी पड़ती है जिस से आरोग्यता की हानि होती है ॥

६४ शीतला रोग के रोकने को टीका लगाना अतिलाभदायक है ॥

६५ बरसात के दिनों में ज़मीन पर सोना नहीं चाहिये क्योंकि इस ऋतु में अनेक कीड़े मकोड़े निकलते हैं ॥

६६ किसी खाने पीने की वस्तु को उघाड़ कर मत रक्खो क्योंकि उस में कूड़ा कर्कट व मकड़ी के अंडे या दूसरे जीव जन्तु पड़ें हैं वे पीछे पेट में जाकर अनेक विकार करते हैं ॥

६७ भोजन करने के पीछे अपने हाथ मुंह को अच्छे प्रकार पवित्र करना चाहिये नहीं तो मुख में दुर्गंध आने लगती है ॥

६८ किसी बन्द मकान में आग जलाकर सोना और दिया जलता छोड़ना या बहुत से मनुष्यों का छोटी जगह में रहना, आरोग्यता हानि करता है ॥

६९ विरोधी भोजनोंको एक साथ कभी मत खाओ जैसे तिलके संग दूध उड़द के संग शहद और सिरके के साथ मधुर, मुनक्का खरबूजादि ॥

७० जिस स्त्री का दूध खट्टा बहुत खाना पीना हो या उस में चींटी छोड़ने से मर जाय या दूध की बूंद पानी में डालने से न डूबे उस का दूध बालक को कभी न पिलाना चाहिये किन्तु निकाल कर फेंक देना ॥

७१ बालकों को गर्भिणी का दूध या गाढ़ा और बासी दूध पिलाने से अजीर्ण होजाता है ॥

७२ छोटे बालकों को अकेला छोड़ना नहीं चाहिये क्योंकि बिल्ली आदि का डर रहता है ॥

७३ छोटे बालक को उछालना कुदाना नहीं चाहिये क्योंकि उसके कोमल अंग और हड्डियां टल जाती हैं तो बड़ा कष्ट होता है ॥

७४ सौर में सील और बालक को मैला रखने से मसान आदि कई प्राणघातक रोग हो जाते हैं इसलिये सूखी हवादार जगह में सौर बनाना और बालकों को सदा स्वच्छ रखना चाहिये ॥

७५ भोजन को सदा अच्छे प्रकार चाब कर खाना चाहिये, उतावली कर के निगल जाने से दांतों का काम आंतों को करना पड़ता है ॥

७६ इतना गर्म भोजन खाना न चाहिये जो हाथ और मुंह दोनों जलते जायं ॥

७७ ओढ़ने बिछाने के कपड़े नित्य भाड़ फटकार के बिछाने चाहियें क्योंकि बहुधा जीव उनमें घुस बैठते हैं या खराब कर जाते हैं ॥

७८ गीला कपड़ा पहनने से ज़ुकाम दाद आदि रोग हो जाते हैं ॥

७९ अचार दही आदि खट्टे पदार्थों को तांबे पीतल के बर्तन में रखने से वे बिगड़ जाते हैं इसलिये मिट्टी चीनी पत्थर के बर्तन में खटाई रखना चाहिये ॥

८० गर्भवती या बालकवाली स्त्रियों को व्रत उपवास करना उचित नहीं किंतु इन्द्रियदमन के लिये विधवा को उपकारी है ॥ इति ॥

---

६१ किसी रोगी का कपड़ा पहरना, या जूठा भोजन करना न
क्योंकि बहुधा रोग छूने से लग जाते हैं ॥

६२ प्राणी का जीवन वायु से होता है इसलिये सदा स्व
सेवन करो ॥

६३ कपड़ों से मुंह वन्द करके छो[illegible]
सांस को वही गंदी वायु
रोग्यता की हानि होती है

६४ शीतला रोग के रोकने को टी[illegible]

६५ वरसात के दिनों में ज़मीन पर [illegible]
में अनेक कीड़े मकोड़े निकलते

६६ किसी खाने पीने की वस्तु को उ
में कूड़ा कर्कट व मकड़ी के [illegible]
हैं वे पीछे पेट में जाकर अनेक

६७ भोजन करने के पीछे अपने हाथ
रना चाहिये नहीं तो मुख में

६८ किसी बन्द मकान में आग जला[illegible]
ना या बहुत से मनुष्यों का छ
हानि करता है ॥

६९ विरोधी भोजनोंको एक साथ कभ
उड़द के संग दद्द और मिरचे के

७० जिस स्त्री का दूध खट्टा कड़ुआ ह
छोड़ने से मर जाय या दूध को
उस का दूध न
न कर पी

११ मा बाप के अहसान को सदा याद रक्खो और उनकी आज्ञा मानो क्योंकि उन्हों ने तुम को बड़ी कठिनाई और प्रेम से पाला है ॥

१२ यदि तुम पर कोई क्रोध करे या तुम्हारी बुराई करे तो तुम सहन करो और उस को विचार कर छोड़ दो जिससे आगे को तुम्हारी प्रशंसा हो ॥

१३ जो परमात्मा सब का अन्तर्यामी और जगत्कर्ता है उस से यही प्रार्थना करती रहो कि हे परमेश्वर ! सब सुखों की मूल हमारी बुद्धि को दिनोंदिन बढ़ाते रहो ॥

१४ क्रोध से प्रथम अपना जी जलता है पीछे औरों को उस की थोड़ी भवक लगती है ॥

१५ शील स्वभाव रहना, अपने परायों से नम्रता करनी, खाली न बैठना, सदा सौभाग्य बढ़ाता है ॥

१६ मनुष्य के जन्म की सफलता का कारण विद्या ही है इसी से परमेश्वर का ज्ञान और मोक्ष मिल सकतीं है ॥

१७ दोनों सन्ध्यासमय ईश्वर की उपासना प्रार्थना और ध्यान करना मनुष्य का कर्तव्य काम है ॥

१८ गृहस्थरूपी गाड़ी में धर्म की धुरी, मेल और प्रीति दो पहिये हैं उस में नर नारी दोनों बैलों के समान हैं यदि परिश्रम और साहस से सुमार्ग में चलेंगे तो अपने मनोरथ को पावेंगे ॥

१९ भूत प्रेत स्याने दिवाने और पाखण्डियों की भक्ति जो मूर्ख स्त्रियां करती हैं अन्त को हाथ मलमल कर पछताती और अपना लोक परलोक दोनों बिगाड़ लेती हैं ॥

२० अपने मुंह से अपनी बड़ाई करना शोभा नहीं देता जब दूसरे भले आदमी प्रशंसा करें उसी से बड़प्पन मिलता है ॥

२१ जो स्त्री पढ़ी लिखी होगी वह धर्मपुस्तकोंद्वारा पातिव्रत धर्म को भी जान सकती है जिस से सौभाग्य और आनन्द प्राप्त होताहै॥

२२ जो स्त्री नीतिपुस्तक पढ़ेगी उस के चित्त से कलह डाहादि बिरोध उत्पादक औगुण जाते रहेंगे, और शान्ति सौजन्य सुशीलता से पूरित होगी ॥

२३ यदि कोई पढ़ी लिखी लुगाई काम क्रोधादि वश हो कर कुमार्गगामिनी बन जाय तो यह दोष कुसंग का है क्योंकि विद्या सदा आत्मा को शुद्ध ही करती है ॥

२४ युवा स्त्री पुरुषों को एकांत में किसी नातेदार के पास भी बैठना योग्य नहीं क्योंकि किसी महात्मा की कहन है कि एकान्त अवसर और कामी पुरुष जब तक नहीं मिलते तब ही तक स्त्रियों का सतीत्व है ॥

२५ मदिरादि नशे पीना, दुष्ट संगति, पतिवियोग, मनमाना जहां चाहे घूमना, कुसमय सोना, पराये घर में बसना, ये छः बातें स्त्रियों के नष्ट भ्रष्ट के कारण हैं ॥

२६ घमंड करना वृथा है क्योंकि जिस पर घमंड है वह सदा स्थिर नहीं रहता वरन अभिमानी को भी ईश्वर नष्ट करदेता है ॥

२७ व्यभिचार मदिरापान जुआ खेलना, धन पौरुष का नाश करके तृष्णा को बढ़ाता है ॥

२८ अभिलाषा को प्रथम ही दबा डालना सहज है उन दिक्कतों से जो उस के पूरा करने में उठानी पड़ती हैं ॥

२९ नम्रता और मधुर वचन से सब को वश कर सकती हो लेकिन क्रोध से अपना शरीर भी आपे में नहीं रहता ॥

३० अधिक लोभ से कभी २ माया भी जाते रहते हैं ॥
३१ अपने अवगुणों को देखो दूसरों की बुराई पर ध्यान मत करो ॥
३२ जब तक विपत्ति में धैर्य न धरोगी सम्पत्ति का सुख भी नहीं पाओगी ॥
३३ जो अधर्म करके सुख की इच्छा करतीहै वह अवश्य दुःख भोगेगी॥
३४ जो दूसरों की बढ़ती देख डाह खाती है वह अपने कलेजे ही फूंकती है औरों का कुछ नहीं बिगड़ता ॥
३५ जगत्रूपी पैंठ में धर्म का सौदा खरीदो और देर मत करो समय बीतने पर महंगा मिलेगा और पैंठ उठ जाने पर प होगा ॥
३६ कभी २ आदमी से तो पाप छिप भी जाता है परन्तु सर्वदर्शी परमेश्वर से कदापि कोई बात नहीं छिप सकती क्योंकि उस दृष्टि सर्वत्र है ॥
३७ यदि तुम से कोई अपराध हो जाय तो उसे छिपाओ मत किन्तु पछतावा करके प्रकट करदो और आगे को बची रहो ॥
३८ किसी अंधे लंगड़े या कुरूप को देख कर हंसो मत करो बस ईश्वर का धन्यवाद करो जिसने तुम्हारे सब अङ्ग पूरे और सुडौल बनाये हैं॥
३९ जहां तक हो सके आप को सहनशील बनाओ जिस से सब को प्यारी रहो ॥
४० विद्या से केवल द्रव्य की ही आशा न करो इस से धन और धर्म दोनों मिलते हैं ॥
४१ जो तृष्णा की मदिरा पीकर अचेत होती है वह घबड़ा कर अपने मनोरथ की हानि करती है ॥

४२ आंखवाला वह मनुष्य है जो अपने कुकर्म को देखे और पाप को पहचाने ॥

४३ बुद्धि से सब सुख मिलता है और मूर्खता से महादुःख ॥

४४ गम्भीरता से बड़प्पन और प्रतिष्ठा होती है लगालूतरी लुगाई सदा तुच्छ और निन्दनीय ठहरती है ॥

४५ परमेश्वर के भजन से पाप कांपता और दूर भाग जाता है ॥

४६ क्रोध और कलह में चुप रहना ही परम औषधि है क्योंकि जलती आग में जब ईंधन नहीं रहता तो आप ही शांत हो जाती है ॥

४७ जिस के शरीर से किसी को दुःख न हो वही पुण्यात्मा है और जिस ने झूंठ को त्याग दिया वही मुनि है ॥

४८ घमण्ड से सब गुण और बड़प्पन मिट्टी में मिल जाते हैं और उपकार फीका हो जाता है ॥

४९ धर्म करते समय दुःख भी मिले तो डर नहीं क्योंकि दुःख बीतने पर केवल सुख ही रह जायगा जैसे रात बीतने पर सूर्य्य प्रकाशित होता है ॥

५० बहुधा लुगाइयां अधर्म को धर्म समझ [illegible] में फंस जाती हैं जैसा देवता के नाम पर बकरा आदि जीवों को कटवाना, उनका मांस खाना, चोरी करके [illegible] या दाढ़ीवालों को भेंट करना आदि ॥

५१ जल से देह, सत्य [illegible]
बुद्धि पवित्र होकर मट [illegible]

५२ [illegible] धन पाकर अभि [illegible]
पाकर व्यभिचार त्यागना [illegible]

५३ जो सुख समय परमात्मा को भूलती है वह शीघ्र ही दुःख में पड़ती है ॥

५४ जो धन का महालोभ करती है वह सन्तोष का कोष खोती है ॥

५५ जो दीनों पर दया नहीं करती वह कठोरचित कहाती है ॥

५६ जो स्त्री पति की सेवा नहीं करती और आज्ञाभङ्ग करती है उसका व्रत दान पुण्य पूजा सब वृथा है ॥

५७ सब से उत्तम धर्मशीला पतिव्रता वह स्त्री है जो परपुरुष का ध्यान स्वप्न में भी नहीं करती ॥

५८ जो स्त्री अधर्म से डर कर पराये पुरुष को चाचा ताऊ या भाई समान जानती है वह भी उत्तम है ॥

५९ जो स्त्री कुलकान या अपवाद के भय से पाप कर्म को छोड़ती है वह मध्यमा गिनी जाती है ॥

६० वह स्त्री नीच गिनी जाती है जो अवसर न मिलने और राजा प्रजा के दण्डभय या व्यभिचारी पुरुष न मिलने के कारण कुकर्म से बची हुई है॥

६१ जीवमात्र के लिये कामदेव बड़ा शत्रु है इसको आंधी के बवूले में पड़ने से सारी उमर का सुख उड़ कर मुंह पर धूल सी छा जाती है ॥

६२ जो स्त्री सांसारिक भोगों में मग्न और विपत्ति में रोती है वह धैर्यवती नहीं कहलाती ॥

६३ काम, क्रोध, लोभ, मोह का यथोचित बर्ताव रक्खो इन की अधिकाई बड़ी दुःखदाई है ॥

६४ जो स्त्री ईर्षा, द्वेष, क्रोध, लड़ाई, डाह, जुल्म, छल, नाराज़ी, लगालूतरापन आदि औगुनों से बची है और पति की सेवा और प्रेम में

१०९ जब तक काम सिद्ध न हो जाय अपना भेद किसी से मत कहो ॥

११० जो बात मुंह से निकालो वह सच्ची और पक्की हो ॥

१११ जहां बहुतसी नारियां इकट्ठी हों तो यह न समझो कि सब का स्वभाव और चलन हमारा सा ही होगा इसलिये किसी समूह में खूब सोच समझ कर सब को हितकारी चर्चा चलाओ ॥

११२ जिस बात को तुम अपने लिये बुरी जानती हो वह दूसरों के साथ भी मत करो ॥

११३ लाज के बिना कुलवती स्त्री ऐसी है जैसा निर्गन्ध टेसू का फूल ॥

११४ चाहे प्राण तक जाते रहें परन्तु किसी के डराव धमकाव या लोभ में आकर अपना सतीत्व मत छोड़ो ॥

११५ विद्या और गुण को प्राप्त करते समय यही समझ लो कि हमारी आयु बड़ी होगी परन्तु धर्मसंचय में मौत को निकट ही जानो ॥

११६ सोते समय सदा सोच लो कि आज हमने क्या२ गुण सीखा और कौन२ भला काम किया ॥

११७ स्वार्थ को सुधारो परन्तु परमार्थ का ध्यान भी अवश्य रक्खो ॥

११८ सांसारिक सम्पत्ति और यौवन बादल की छाया और बिजुली की चमक के समान है, इन का घमण्ड और भरोसा करना केवल मूर्खता है ॥

११९ अज्ञान स्त्री अनहोनी चाहती है और ज्ञानवती असम्भव बात को नहीं करती ॥

१२० गम्भीर का मन उस के भेदों की खानि है ॥

१२१ विद्या की दीमक भूल और आलस्य है और उस का दीपक अभ्यास है ॥

१२२ सांसारिक सुख से मस्त होकर ईश्वर को न भूलना चाहिये क्योंकि ईश्वर की याद और धर्म ही तुम को सब आनन्द देता है ॥

१२३ एक काम करते समय दूसरी बात मत सोचने लगो क्योंकि ध्यान बटने से पहिला काम भी बिगड़ जायगा ॥

१२४ ज्ञानी का एक दिन मूर्ख की सारी आयु से उत्तम और लाभदायक है ॥

१२५ बिना अभ्यास के सब गुण ऐसे हैं जैसे अन्धे के हाथ में आरसी ॥

१२६ कम बोलना और बहुत सोचना बुद्धिमानी का काम है ॥

१२७ अपने परिश्रम का फल बहुत मीठा लगता है क्योंकि वह निश्चिन्ताई से खाया जाता है ॥

१२८ जो भले बुरे को नहीं पहिचानतो वह पशु से भी अधम है ॥

१२९ जिसका चित्त एक ठिकाने नहीं रहता उस से भलाई की आशा कभी मत करो ॥

१३० परमेश्वर जो कुछ तुम को देता है उस का धन्यवाद कर के बड़ी खुशी से खाओ पहनो, कभी किसी वस्तु का निरादर मत करो ॥

१३१ विद्या के बिना कैसी ही तीव्र बुद्धि क्यों न हो
तो जैसे खान से निकला

१३२ विनोद प्यारे
में बड़े

१३३ है प्या
और
यत्न से चाहि

१३४ खाली बैठने या वृथा बकवाद करने से किसी दूसरे की बेगार करना ही भला है ॥

१३५ आयु की हर घड़ी ऐसी बहुमूल्य है जैसा सोने का प्रत्येक खण्ड ॥

१३६ बीती हुई बात पर पछतावा करना वृथा और आगे की सुध रखना सुख का हेतु है ॥

१३७ धीरज से सब काम बनते और उतावली से बिगड़ जाते हैं ॥

१३८ बहुत सी बहू बेटियां लज्जा के कारण अपनी पीड़ा को प्रकट नहीं करतीं ऐसी अनुचित लज्जा से पीछे अधिक कष्ट उठाना पड़ता है ॥

१३९ किसी काम के सीखने में इस कारण घिन मत करो कि वह हम से ठीक नहीं होता धीरे २ अभ्यास से सब जान जाओगी ॥

१४० अन्न जल गौ पृथ्वी वस्त्र तिल रुपया सोना आदि सब दानों से वेदविद्या का दान अतिश्रेष्ठ है, इसलिये जितना हो सके विद्या की उन्नति में श्रम और यत्न करना चाहिये ॥

१४१ चिन्ता चिता से भी अधिक दुःखदाई है क्योंकि चिता में मृतक जलाये जाते हैं और चिन्ता जीते हुए को जलाती है ॥

१४२ गाने बजाने से मन प्रसन्न रहता है इसलिये उत्तम २ गीत गाना भी उचित है ॥

१४३ लालची मनुष्य का मन बड़े लाभ से भी सन्तोष नहीं पाता वरन ईर्षा, क्रोध, मोह, वैर, तोड़जोड़, अहंकार, ये सब लोभ से उत्पन्न होते हैं ॥

१४४ मरने पर धर्म के सिवाय कुछ साथ नहीं जाता इसलिये सब काम धर्मानुसार ही करने चाहियें ॥

१४५ बड़े आदमी जैसा काम करते हैं उसी प्रकार सब लोग चलते हैं इसलिये कुलीनों को सदा विचार कर कोई काम करना चाहिये ॥

१४६ मन की शुद्धता करते समय तो अतिक्लेश जानपड़ता है परन्तु पीछे ज्ञान का प्रकाश होकर सत्य सुख मिलता है ॥

१४७ जिस बात से तुम अनजान हो उस में दखल मत दो ॥

१४८ जो एक इन्द्रिय के विषय से सारे शरीर को कष्ट हो तो उस विषय को अवश्य त्याग दे ॥

१४९ साहसी और दृढ़ चित्त के निकट कठिन काम भी सहज हो जाता है और डरपोक बने हुए काम को भी बिगाड़ देता है ॥

१५० जिस को अपना भरोसा नहीं उस का भरोसा दूसरों हो सकता है ॥

इति ॥

श्री जुबिली नागरी
बीकानेर

तीसरा अध्याय ॥

सामाजिक शिक्षाओं के बयान में ॥

१ हे पुत्रियो ! तुम सदा अपने बड़ों को नमस्ते या प्रणाम कर लिय करो क्योंकि वह तुम्हारे पूज्य हैं और तुम को आशीर्वाद देते हैं

२ अपनी साथिन लड़कियों से सदा मेल मिलाप रक्खो और सब किसं से मीठे वचन बोलो जिस से तुम्हारी बड़ाई हो ॥

३ जो तुम सीना पिरोना फूल बूटा काढ़ना सीखोगी तो सब ठौर तुम्हार आदर होगा ॥

४ अपने छोटे बहन भाइयों और मोहल्ले के बालकों से कभी मत ल ड़ो न किसी को गाली दो नहीं तो तुम को भी कोई अवश्य मारेगा

५ चतुरा लड़कियां गुड़ियों के खेल से गृहस्थी का सब धन्धा सीखती हैं अर्थात् किस २ कपड़े, वर्त्तन, पलंग, बिछौनों को किस प्रकार स-म्भाल कर रखते हैं ॥

६ जब तुम्हारे घर कोई पाहुना या ग़ैर स्त्री आवै तो बहुत मत बोलो और रो कर किसी वस्तु के लिये हठ न करो इस में तुम्हारी हँसी होगी ॥

७ जब कोई बड़ी बूढ़ी तुम से किसी काम को कहै तो बड़ी सावधानी और चतुराई से करो जो फूहर न कहलाओ ॥

८ नंगी उघारी कभी मत फिरो और लड़कों के साथ भी मत खेलो क्यों-कि यह बड़े लाज की बात है ॥

९ जब कोई चीज़ किसी जगह से उठाओ तो काम करने के पीछे स-म्भाल कर उसी जगह रखदो ॥

१० जीवन उसी का सफल है जो दूसरों की भलाई करती है ॥

११ ऐसे काम की प्रतिज्ञा और हठ मत करो जो पूरा न हो सके ॥

१२ दुराचारी पुरुष या स्त्री तुम को कितना ही विश्वास और प्रेम क्यों न जतलावे और कैसा ही आदर करे परन्तु सदा उस से बचो रहो ॥

१३ क्रोधी, कटुवादी, उन्मत्त, और कमीन का सामना करना अच्छा नहीं होता वरन उस की भलाई कर के अहसान से

१४ मूर्खा स्त्री की दौलत सदा थोथी बातों में काम में संकोच होता है ॥

१५ चतुराई और परिश्रम तुम को सदा न्द में कटेगी इसलिये चतुराई के

१६ बुरे को भला, व्यभिचारी को ब्रह्मचारी रादर करना बराबर अज्ञान है ॥

१७ आपस में बैठ कर वृथा बकवाद चबोड़े नहीं चाहियें क्योंकि यह अमूल्य हितकारी नहीं आवेगा ॥

१८ बड़े बूढ़ों की टहल, बराबर वालियों से स्नेह और छोटों रना मेल मिलाप का मुख्य कारण है ॥

१९ वह धन अच्छा नहीं जिस से बदनामी मिले और जीवन को ह में डाले या अपने काम में न आवे ॥

२० बड़ाई जब है कि वैरी भी बिना प्रयोजन तुम्हारी प्रशंसा करे ॥

२१ वह काम करो जिस में धर्म बना रहै, और ऐसी बात कहो जो सच्ची और प्यारी हो ॥

... गुण मिलते हैं जैसा पारस से लोहा सोने की सू-
... बन जाता है और दूध में पानी मिल कर उसी के मोल वि-
कता है ॥

२३ दुष्टों की सङ्गति से अकेले रहना ही भला है ॥

२४ किसी अनजान मनुष्य के साथ कभी मत जाओ चाहे वह कैसी-
ही चीज़ तुम को दे ॥

२५ लड़कियो! तुम अच्छी तरह समझलो कि मा बाप के सदृश श्व-
सुरालवाले तुम्हारे औगुनों और हठ को क्षमा नहीं करेंगे, बर
दोष ढूढ़ेंगे इसलिये अपने स्वभाव को पहिले ही सुधार लो

२६ नई दुलहिन के देखने को मोहल्ले और नाते की स्त्रियां आती हैं
तो यही देखती हैं कि बहू की बोलचाल उठकबैठक आंचल
लाज और चतुराई कैसी है तुम इन बातों में सचेत रहो ॥

२७ बहुतेरी स्त्रियां वा लड़कियां बहू की मा को ठट्ठे से गाली दे-
ती और दान दहेज में खोट निकालती हैं परन्तु सुशीला बहू
किसी बात का कठोर उत्तर नहीं देती या खिलखिला कर नहीं
हंसती ॥

२८ कितनी ही लड़कियां ऐसी निद्रावती और भूखी होती हैं कि पहर
दिन चढ़े उठना और दिन में चार बार खाना इस स्वभाव
से श्वसुराल में आदर नहीं मिलता ॥

२९ सास बहुओं की कलह में अधिक दोष बहुओं का इस कारण से
है कि वह अलग घर बसाने और मा से बेटे को जुदा करने की
फ़िक्र करती हैं परन्तु इस से कभी भला नहीं होता ॥

३० पति को मोहित करने का वशीकरण मंत्र उस की सेवा करना मधुर बोलना आज्ञा पालना ही है किन्तु सब गुरु जनों से ऐसा ही बर्ताव चाहिये ॥

३१ अपनी सहेलियों में बैठ कर अपने स्वामी तथा सास श्वशुर की कोई ऐसी बात या चर्चा न करो जिस से उन की निन्दा और मूर्खता प्रकट हो ॥

३२ जो स्त्री दूसरी लुगाइयों के सामने अपनी हठ और चालाकी या पति को डराने धमकाने की बड़ाइयां मारती हैं वे सज्जन स्त्रियों के बीच महातुच्छ गिनी जाती हैं ॥

३३ अपने सास श्वशुर आदि बड़े बूढ़ों का आदर सत्कार सदा करती रहो क्योंकि वे तुम्हारे पूज्य हैं और उन का आशीर्वाद तुम्हारी उन्नति का कारण है ॥

३४ छोटे बालकों को नित्य परमेश्वर की प्रार्थना सिखलाती रहो जिस से उन के चित्त में परमात्मा की भक्ति दृढ़ रहे ॥

३५ जहां तक हो सके अपने पति की टहल खुद करो नौकरों के मत भूलो क्योंकि यह तुम्हारा धर्म है ॥

३६ जिस कुल में स्त्री अपने पति और पति अपनी स्त्री उस में सदा लक्ष्मी वास करती है और परस्पर दारिद्र्य छा जाता है ॥

३७ ईश्वर की आज्ञा है कि कन्या ब्रह्मचर्य के साथ विद्या पने समान गुण वाले युवा पुरुष से विवाह करे ॥

३८ मूर्ख और अनमेल से विवाह होने में जो कुछ दुःख होता ना दुःख जन्म भर क्वारे रहने में नहीं होता ॥

३९ जो स्त्री अच्छे प्रकार सुशिक्षित विद्यावती होगी तो अपनी सन्तान

को भी सुन्दर गुणवान् बना सकती है ॥

४० बचपन में जैसी कुचाल या सुचाल पड़ जाती है ... जन्म भ

फल दिखाती है ॥

४१ विद्वानों में मूर्ख का आदर नहीं होता परन्तु

स्त्री है उस का आदर सत्कार सब ही कर

४२ मूर्खा स्त्रियों की सन्तान भी मूर्ख ही रहती है

जो हर घड़ी और अधिक समय तक उन की

४३ जो अपनी सन्तान को नहीं पढ़ाते और गुणहीन

उन से जन्म भर शत्रुता करते हैं ॥

४४ हे पुत्रियो ! तुम सदा लड़की नहीं बनी रहोगी

तरह एक घर की मालकिनी बनोगी उस अ

ढङ्ग सीख लो ॥

४५ जब तुम सुसराल में जाओ

पड़ेगा वहां चतुरा

खोये हुए समय पर पछतावा आ

४६ बात करते समय इतनी मत शरमाओ जो

परन्तु बुरे कर्मों से सदा शरमाना चाहिये

४७ जब दो मनुष्य बातचीत करते हों तो उन क

जाओ ॥

४८ यदि कोई कुलवती या भला आदमी तुमसे कुछ

अवश्य सुनलो चाहे अपने विरुद्ध भी हो ॥

४९ जब कोई मनुष्य भोजन करता हो तो तुम उस को ओर न देखती रहो अपनी नीची गर्दन किये काम में लगी रहो ॥

५० अपने बड़े बूढ़ों की ज़िन्दगी में निश्चिन्ताई से कोई हुनर अवश्य सीख लो जो आगे को काम आवे ॥

५१ जो सुपुत्री होती हैं वे अपने कुल को प्रकाश करके माता पिता को भी बड़ाई दिलवाती हैं ॥

५२ प्यारी पुत्रियो ! तुम्हारे आंख, कान, नाक, मन, बुद्धि आदि सब लड़कों के समान हैं तो चाहिये कि लड़कों की तरह विद्या गुण प्राप्त कर के तुम भी आदर पाओ ॥

५३ पढ़ी लिखी लड़कियां विवाह होने पर जब अपनी मा बहनों से अलग हो कर और कभी पति के परदेश जाने पर, मन का सब हाल लिख कर जता सकती हैं और उन के समाचार आप जान सक्ती हैं ॥

५४ जो स्त्रियां हिसाब नहीं जानतीं वे धोवन की धुलाई या पिसनहारी की पिसाई को दीवारों पर लकीरें खींच कर कठिनाई से काम चलाती हैं किन्तु पढ़ी स्त्री हज़ारों रुपये का हिसाब करके भली भांति घर का प्रबंध कर लेती हैं ॥

५५ तुम्हारे घर जब कोई दूसरी स्त्री आवे तो उस को प्रणाम या पाय-लगी करके बैठने को आसन दो और पान सुपारी से उचित सत्कार करो ॥

५६ लड़कियो ! तुम सदा ध्यान रक्खो कि घर के कौन २ काम करके तुम अपनी माता को सहायता दे सकती हो ॥

५७ अपने छोटे बहिन भाइयों की सुध रक्खो और रोते मचलते हुए उन को बहलाया करो ॥

५८ वह बड़ी कुलकलङ्किनी राक्षसी है जो अपने कुटुम्बियों से कलह रखती या ईर्षा करके बुरा चाहती है ॥

५९ ईश्वर ने स्त्री को सदा परतन्त्र बनाया है अर्थात् बालकपन में पिता जवानी में पति और बुढ़ापे में पुत्र रक्षा करता है ॥

६० कुटिनियों और कमीन स्त्रियों से कभी प्रीति मत जोड़ो, न कभी उन की कोई भली बुरी बात सुनो, यदि इन से काम पड़ जाय तो चतुराई के साथ अपना मतलब निकाल लो ॥

६१ मेला टेला सांझी दर्शन या भीड़ भाड़ में फिरना अपने धर्म्म में बट्टा लगाना है ॥

६२ स्त्रियों को उचित परदा योग्य है जिस से लाज व धर्म बना रहे किन्तु वृथा परदे से अनेक हानियां होती हैं ॥

६३ विवाह सदा दूसरे नगर में होना चाहिये, पड़ोस या निज नगर में होने से बहुधा क्लेश रहता है ॥

६४ बहुधा लोभी जन रुपया ले कर पुत्री का विवाह करते हैं परन्तु अंत को उस का फल घोर विपत्ति भोगते हैं ॥

६५ खेल तमाशे करके वर कन्या को फाँस देने से विवाह नहीं होता वरन इस संस्कार में जन्म भर के दुःख सुख की प्रतिज्ञा करनी पड़ती है ॥

६६ नाई पुरोहितों के भरोसे पर अपनी सन्तान का विवाह करना उन का जन्म व्यर्थ खोना है ॥

६७ पहिले समय में स्त्रियां विद्यावती हो कर स्वयंवर में अपनी इच्छानुसार पति से विवाह करती थीं जिस से उन का जीवन आनंद में बीतता था ॥

६८ जन्मपत्री मिलाते समय स्वभाव अवस्था और गुण का ध्यान अवश्य रखना चाहिये ॥

६९ ईश्वर उस की सहायता करेगा जो यत्न से अपनी रखवाली आप करता है ॥

७० जो अपनी जिन्दगी को सफल करना चाहते हो तो समय को वृथा न खोओ ॥

७१ गया समय फिर हाथ नहीं आता किन्तु मृत्यु निकट आती है ॥

७२ आज के काम को कल पर मत छोड़ो क्योंकि एक आज दो कल के बराबर है ॥

७३ प्रत्येक काम दृढ़ता और साहस के साथ करना चाहिये बीच में छोड़ने से न करना ही भला है ॥

७४ काम वही पूरा होता है जो अपने आप मन लगा कर किया जाता है दूसरों के भरोसे बहुधा हानि उठानी पड़ती है ॥

७५ तुम्हारी दो आंखें तुम्हारे दोनों हाथों से अधिक काम कर सकती हैं जब कि ध्यान से देखो ॥

७६ अपने नौकरों के काम को न देखना मानो अपने हाथ से काम बिगाड़ना है ॥

७७ यदि तुम धनवान् बना चाहो तो किसी थोथे काम में पैसा मत उठाओ ॥

७८ छोटे २ खर्च भी सावधानी से करने चाहियें क्योंकि बूंद बूंद टपकने से घड़ा खाली हो जाता है ॥

७९ जो बेज़रूरी चीजों को मोल लोगे तो आवश्यक चीज़ को भटकोगे ॥

८० बहुमूल्य गहने कपड़े साधारण लोगों को रोटी का मुहताज बना देते हैं ॥

८१ जो स्त्री अपनी बेपरवाही से पति को ऋणी करती है वह पतिसहित विपत्ति में पड़ती है ॥

८२ विना गुण चमकीले कपड़े और गहनों से प्रतिष्ठा नहीं होती किन्तु गुणसहित साधारण वस्त्रों से ही मान होता है ॥

८३ बहुमूल्य वस्त्रों से डाह बढ़ती है, घमण्ड उत्पन्न होता है न कि योग्यता और आरोग्यता ॥

८४ वृद्धावस्था और विपत्तिकाल के लिये हाथ चलते में कुछ बचा रक्खो क्योंकि सबेरे का निकला सूर्य सांझ को अवश्य छिपेगा ॥

८५ ऋण काढ़कर उठानेसे एक समय खाना या भूखे सो रहना अच्छा है॥

८६ जो दूसरों को पातक लगाता है वही पापी ठहरता है कहावत है कि जो आकाश की ओर थूकता है उसी के मुंह पर गिरता है ॥

८७ जब दो आदमियों में मेल होगा तो एक गावेगा दूसरा हंसेगा और कलह में एक चिल्लाता और दूसरा रोता है ॥

८८ एकाएक किसी की बात पर विश्वास मत करो, प्रथम उस की भलाई बुराई सोच लो ॥

८९ बहुधा ठगनी स्त्रियां भक्तिन और फ़क़ीरनी के भेप में रहती हैं और मूर्खा स्त्रियों को अनेक धोखे दे कर ठगती हैं इन से सचेत रहो ॥

९० अपनी कङ्गाली पर सदा सन्तोप करना चाहिये क्योंकि निश्चिन्ताई से टूटी खाट पर भी नींद आती है और असन्तोपी अमीर को नरम बिस्तर पर भी चिन्ता नहीं सोने देती ॥

९१ यद्यपि धनवान् को सब वस्तु मिल सकती है परन्तु विद्या विना परिश्रम के नहीं मिलती ॥

९२ दौलत से अपनी प्रतिष्ठा का अधिक ध्यान रक्खो ॥

३ प्रत्येक काम को सावधानी से करो क्योंकि हानि हर घड़ी अपनी घात लगाये रहती है ॥

४ किसी के बाहरी आडम्बर को देख कर मोहित न हो जाओ किन्तु उस के शील और गुण का मान करो ॥

५ प्राचीन मनुष्यों का वृत्तान्त अगले आदमियों को शिक्षा देता है ॥

६ जैसी स्त्रियों की सङ्गति बैठोगी तुम्हारा स्वभाव भी वैसा ही हो जायगा ॥

७ जो बुद्धिमती है वह दुष्ट सङ्गति और मूर्खों से बचकर अकेली बैठना भला मानती है ॥

९८ धन पा कर कमीन उछलते हैं और कुलीन नम्र होते हैं ॥

९९ ऋण की पीठ पर झूंठ फ़रेब सदा सवार रहते हैं इसलिये जहां तक बने ऋण से अलग रहो ॥

१०० जो स्त्री अपने स्वामी का विश्वास नहीं करती वह मानो उस से छिपा हुआ वैर करती है ॥

१०१ संड मुसंड या धनी को दान देना पुण्य के बदले पाप में डालता है, भूखे अपाहिजों को देना या विद्वान् साधू के अर्पण करना श्रेष्ठ दान कहलाता है ॥

१०२ पति की सेवा शुश्रूषा सन्तान से भी अधिक करो क्योंकि पति ही से सन्तान हुई है ॥

१०३ जो तुम को शिक्षा करे या गुण सिखलावे तुम सदा उस की सेवा और आदर करती रहो नहीं तो निर्गुनी गिनी जाओगी ॥

१०४ तुम्हारे घर जब कोई अतिथि अथवा भूखा प्यासा आवे तो यथा-शक्ति धर्मपूर्वक संतुष्ट मन से उस की शुश्रूषा करो ॥

१०५ अपनी पड़ोसन को सदा प्रसन्न रक्खो और उस के काम में सहायता करती रहो तो वह भी तुम्हारे साथ सलूक अवश्य करेगी ॥

१०६ बालकों को जन्म ही से सुधारो क्योंकि हरी लकड़ी हर तरफ़ को लच सकती है और सूखी लचाने से टूटने का डर है ॥

१०७ शिक्षा देना केवल मुंह से बोल कर ही नहीं होता, जो बालक के समझने और बोलने तक न हो सके, वरन संकेत और स्पर्श की भी अनेक शिक्षा हैं जैसा जो बालक गोद में रहेगा उस को खाट पर ठहरना कठिन होगा ॥

१०८ यदि तुम से किसी का दुःख दूर हो तो कभी मत चूको ॥

१०९ धन को इतना छिपाना न चाहिये जो मरने पर भी किसी के काम न आवे और धरती में ही रहै ॥

११० दीन दुखियों पर दया करके अपनी सामर्थ्य अनुसार उनें को सहायता करो ॥

१११ अपने नौकर और टहलनी को दूसरों के सामने मत घुड़को परन्तु एकांत में अच्छे प्रकार धमका दो ॥

११२ युवा सन्तान को ऐसी कड़वी बात कहना योग्य नहीं जो उन को रंज हो वरन जवान बेटों का बड़ा भय मानना चाहिये ॥

११३ अपनी प्रकृति को ऐसा सुधारो जो अन्य स्त्री पुरुष तुम को फूहड़ और गंवारी न बतलावें ॥

११४ जो धन दान भोग के काम नहीं आया वह अवश्य नष्ट हो-जायगा ॥

११५ नौकर उस को रक्खो जो आलसी रोगी और चोर न हो ॥

११६ वैद्य की सङ्गति से ज्ञानी पण्डित की संगति अत्युत्तम है ॥

११७ ज्ञानी, सन्तोषी, जितेन्द्रिय और सच्चे साधु का आदर भोजन वस्त्र और वचन से सदा करती रहो ॥

११८ जो काम आज करने का है उसे कलपर मत टालो, नहीं तो कल का काम परसों टलेगा और अन्त को बहुत से काम बाक़ी रह जायंगे ॥

११९ जो तुम से उमर, नाते, बुद्धि, धन और रुतबे में बड़ा हो उससे हंसी ठट्ठा मत करो ॥

१२० यदि कोई मनुष्य कुछ लिखता हो तो तुम उस को मत देखो जब तक वह आप न कहे ॥

१२१ जो तुम्हारा सत्कार करे उस से अधिक उस का आदर करो ॥

१२२ विवाहिता स्त्री को सब धर्मों से श्रेष्ठ पतिसेवा है उस का पूज्य-देव पति ही है ॥

१२३ जिस प्रकार चांद बिन यामिनी या फल बिन वृक्ष शोभा नहीं पाते उसी तरह पतिहीन कामिनी शोभित नहीं होती ॥

१२४ जो अपने दुःस्वभाव से पति को दुःखी करती है वह एक दिन ऐसी दुःखी होगी जैसे तोता अपने पंखों को काट कर क्लेश पाता है ॥

१२५ विवाहसमय वर कन्या में इस प्रकार प्रतिज्ञा होती है कि हम दोनों सदा सच्चे मन से प्रेमसहित सुख दुःख में एक दूसरे के साथ रहेंगे, पीछे जो इस का पालन करते हैं वे ही गृहाश्रम का सुख भोगते हैं ॥

१२६ वह स्त्री बड़ी अभागिनी है जो अपने स्वामी को कपड़े गहने और चटोरपन के लिये ऋणी करती है ॥

१२७ किसी की चुगली करना बड़ी बुराई का काम है क्योंकि यही फूट की जड़ है ॥

१२८ अपनी सास जिठानी के कड़वे बोलों से रोष मत करो वरन जिस बात पर उन्होंने तुमको बुरा कहाहै उसको विचार कर छोड़दो ॥

१२९ बहुतेरी स्त्रियां तनक तनक बात पर अपना सिर कूटती चीज़ों को तोड़ती और बालकों पर झूंझल उतारती हैं, वे कुलीन स्त्रियों के बीच महाराक्षसी कहला कर बड़ा दुःख पाती हैं ॥

१३० बहुधा स्त्रियों की ऐसी कुबान होती है कि सदा एक गहने को तुड़वा कर दूसरा बनवाती हैं इस से सुनार का घर भरता और अपनी हानि होती है ॥

१३१ किसी के गहने कपड़ों को देख मत ललचाओ किन्तु गुणों की होड़ करो और उन को सीखो ॥

१३२ जो हुनर तुम जानती हो उसे दूसरी लड़की या लुगाइयों को भी सिखलाओ और अनजानों की हंसी या निन्दा करके अपना घमण्ड मत जताओ ॥

१३३ जो अज्ञान स्त्रियां पीपल बबूल के पेड़ कुत्ता मुर्गादि जीव नदी तालाब में देवता और तीर्थ समझती हैं वा धोबी कुम्हार नायिन मालिन आदि की बातों का प्रमाण करके ईश्वर का ध्यान छोड़ती हैं और पति आदि विद्वान् पुरुषों को मूर्ख जानती हैं वह धोखा पा कर सदा विपत्ति भोगती हैं ॥

१३४ वह निन्दित स्त्री सदा नरक भोगेगी जो विष खाकर या जल में डूब कर आत्मघात करती और दूसरों को क्लेश पहुंचाती है ॥

१३५ अज्ञान स्त्रियों में लगाया बुझाई की ऐसी कुबान होती है जिस से बाप भाई या बेटों में भी रंज की गांठ पड़ कर बैर के बादल

बंध जाते हैं और अन्त में घर तेरह तीन हो जाता है ॥

१३६ सुशीला स्त्री वैरियों और लड़ाकों को भी अपना दास बना लेती है परन्तु कर्कशा के सगे भी शत्रु हो जाते हैं ॥

१३७ गुणहीन नारियां अपने तनक तनक काम जैसा गोटा किनारी गोखुरू टोपी या पकवान मिठाई बनाने के लिये चतुर स्त्रियों की चिरौरी और टहल सेवा के काम करती हैं यह भी बड़ी लाज की बात है ॥

१३८ जो तुम अमीर नहीं हो तो छोटे छोटे काम में दूसरों का सहारा मत ढूंढ़ो और पैसा भी मत उठाओ—अपने दुपट्टे आप रंगलो, और पहुंचों नौगरी में डोरा खुद डाल लो, कपड़ों को भी अपने हाथ से सींलो ॥

१३९ जिस चीज़ की ज़रूरत न हो उसे मोल मत लो, बेज़रूरी चीज़ कैसी ही उत्तम और सस्ती हो धरी २ अवश्य बिगड़ जायगी॥

१४० अपनी आमदनी से अधिक खर्च कभी मत करो वरन उस में से कुछ अंश बचाती रहो ॥

१४१ बेपरवाही से बहुतसी चीजें बरबाद हो जाती हैं जैसा नाज को चूहे खाते, भोजन को बिल्ली बन्दर ले जाते हैं, कपड़ों को सील और कीड़े नष्ट कर देते हैं, चाहिये कि सदा सुध करके देखती रहो ॥

१४२ प्रत्येक वस्तु को इस अटकल से खर्च करो जो वृथा न जाय और संकोच करना भी न पड़े ॥

१४३ किसी के उभारे में आ कर बेढंग काम न करो या दूसरे की देखादेखी अपने वित्त से अधिक खर्च मत उठाओ ॥

१४४ जो चतुर स्त्री समय विचार कर काम करती है, ग़रीबी में भी अमीरों का सुख पाती है ॥

१४५ पण्डिता स्त्री की सन्तान सहज ही विद्वान् सुशिक्षित हो सकती है ॥

१४६ बहुधा ठगिये ब्राह्मण और साधुओं के भेष में ग्रहदशा या हाथ की रेखा बतलाते घर २ धोखा देते फिरते हैं, इन से सदा सचेत रहो ॥

१४७ स्त्री का सौभाग्य पति से ही है इसी कारण बहुत सी पतिव्रताओं ने स्वामी के हित प्राण तक खो दिये ॥

१४८ विद्यावती स्त्री नाना प्रकार की दस्तकारी और भांति २ के भोजन बनाना पुस्तकों के द्वारा जान कर सब को आनन्द देती है ॥

१४९ जिन कपड़ों में पेट बांह आदि दीखते रहें उन का पहनना उचित नहीं ॥

१५० चेली होना या परपुरुष की सेवा करना स्त्रीधर्म के विरुद्ध और संसार में निन्दनीय है ॥

१५१ किसी पाखण्डी के मन्त्र यन्त्र से औलाद की आस रखना और टोटके उतारों में अपनी भलाई जानना कीर्त्ति और धर्म की हानि करना है ॥

१५२ एक ही बात को बार बार कहना या बूझना मूर्खता का चिन्ह है ॥

१५३ जो औरों की बुराई तुम में कहेगी वह तुम्हारी बुराई भी दूसरों से अवश्य करेगी ॥

१५४ जब तक धन से काम चले जान पर दुःख मत सहो, यदि जान रहेगी तो धन फिर भी हो सकेगा ॥

१५५ जब किसी बड़े बूढ़े या अपने स्वामी से कोई मतलब चाहो तो बड़ी आधीनता से कहो, तान से कहने पर भी काम सिद्ध न होगा ॥

१५६ बुद्धिमान् और इज्जतदार से थोड़ा बोलो और बड़े ध्यान से सुनो कि वे क्या कहते हैं ॥

१५७ घर के काम और पढ़ने लिखने सीने आदि से छुट्टी पाने पर छोटे बालकों और अपनी सहेलियों से ऐसी कहानी और पहेलियां कहो सुनो जिन से शिक्षा मिले ॥

१५८ जो केवल दूसरों के कहने पर चलोगी और अपनी बुद्धि को काम में न लाओगी तो अन्धों की तरह ठोकर खाओगी ॥

१५९ सज्जन कुलवती नारी जिस किसी के साथ जो सलूक करती है उस से बदला नहीं चाहती और न कभी अहसान जताती है ॥

१६० झूंठे और स्वार्थी का विश्वास भूल कर भी न करो वरन उस की बनावट से सचेत रहो ॥

१६१ जिसकी विद्या और चतुराई से दूसरों को लाभ नहीं होता वह समुद्र का खारी पानी है ॥

१६२ हाथी से हज़ार हाथ, घोड़े से सौ हाथ, सींगवाले से दस हाथ दूर रहना कहा है परन्तु दुर्जन का मुख देखना भी भला नहीं ॥

१६३ विना अभ्यास विद्या, वेभूख भोजन, मूर्खों की प्रीति, विना ऋतु रति भोग यह चारों बात विष के समान हैं ॥

१६४ जो तुम्हारी हितकारी बात न माने उस पर नाराज़ मत हो वरन जहां तक बने उस को उपदेश करके सुमार्ग में लाओ ॥

१६५ जो जान बूझ कर हठधर्मी करे और आप को सब से बुद्धिमान् समझे उस के साथ अपना माथा मत पचाओ ॥

१६६ जो किसी का बुरा चाहेगा भगवान् अवश्य उसी का बुरा करेगा ॥

१६७ जो गम्भीर स्त्री होती है वह सदा आप को तुच्छ समझ कर नम्रता से रहती है ॥

१६८ वह स्त्री सब से उत्तम है जो बुराई के पलटे भलाई करे, और भलाई का बदला भलाई देने वाली मध्यमा कहलाती है, नीच वह है जो बुराई के बदले बुराई करती है, परन्तु भलाई करने-वाले के साथ जो बुराई करती है वह महाराक्षसी होती है ॥

१६९ चार बातों से सदा आनन्द मिलता है अर्थात् जिस पर पति का प्रेम रहे, ईश्वर की कृपा हो, सज्जन और कुलीन जिस की प्रशंसा करें, और बड़े बूढ़े जिस को आशीष दें ॥

१७० चार बातों से स्त्री बिगड़ती है अर्थात् अनमेल पति, भूत प्रेत की भक्ति, स्वेच्छाचार से मनमाना जहां तहां फिरना, और व्यभि-चारिणी कुटनियों की संगति ॥

१७१ चार स्त्री मारी जांय तो कुछ अचम्भा नहीं अर्थात् जो धनवती होकर अकेली रहे, कुनबे से विरोध कर के सदा कलह रक्खे, पति से विश्वासघात या व्यभिचार करे, और भूत प्रेत देवी आदि का बहाना करके लोगों को छला करे ॥

१७२ जब तुम किसी को किसी चीज़ या बात का भरोसा दो तो वही करो नहीं तो तुम्हारा विश्वास जाता रहेगा ॥

१७३ धर्म का वैरी कुपढ़ साधू, देश का शत्रु अन्यायी राजा, बीमार का हिंसक अधकचरा वैद्य, और सन्तानकी वैरिन मूर्ख माता होती है ॥

१७४ बाल रंगने और शृङ्गार करने से जवानी नहीं आती ऐसे ही मांगने से दौलत ॥

१७५ वृथा बकवाद से बड़प्पन, फ़ज़ूलख़र्च से दौलत, घमंड से मेल, कंजूसी से प्रतिष्ठा नहीं रहती और तृष्णा सर्व सुख का नाश करती है ॥

१७६ यदि दो स्त्रियां लड़ती झगड़ती हों तो तुम न्याय की बात कहो, किसी का पक्ष मत करो और जहां तक बन पड़े उन में मेल करा दो ॥

१७७ दान करके प्रकट करना और प्रशंसा चाहना उस के फल को फीका कर देता है ॥

१७८ धीरज, धर्म्म, सच्चा मित्र और पतिव्रता स्त्री विपत्ति समय परखे जाते हैं ॥

१७९ अपने वैरी के सामने बहुत मत बोलो क्योंकि न जाने कोई भेद की बात प्रकट हो जावे और पीछे पछताना पड़े ॥

१८० मूर्ख का प्रेम ज्ञानी के वैर से भी बुरा है ॥

१८१ वैरी कैसा ही निर्बल हो तो भी उस से सदा सावधान रहना चाहिये ॥

१८२ निर्दयी के सताने से दीनों को जितना दुःख होता है उस से बहुत अधिक दुःख उस के फल भोगने में निर्दयी को होता है ॥

१८३ अधर्मी के आसरे रहने वाले भी पीछे उस की बुराई ही करते हैं और विपत्ति में दूर भाग जाते हैं ॥

१८४ चतुरा स्त्री तनक संकेत पा कर अवसर पहिचान सर्वहितकारी काम करती है, परन्तु मूर्खा ताड़ना और दंड पाने पर भी विपरीत आचरण नहीं छोड़ती ॥

१८५ जहां दोनों मूर्ख होंगे वहां रात दिन कलह रहेगी, एक मूर्ख होने से किसी एक समय क्लेश होगा और दोनों सहनशील होने से सदा आनन्द रहेगा ॥

१८६ चांदी सोने से विद्या और गुण का दहेज देना अतिश्रेष्ठ है जिस से लड़की और दामाद दोनों को जन्म भर आनन्द मिले ॥

१८७ अपनी सखी सहेलियों में बैठ कर उन के गुण सीखो और शील सन्तोष को अंगीकार करो, उन के खाने पहने की ईर्षा और कुचाल से बची रहो ॥

१८८ जिस काम के सीखने में जितना परिश्रम और समय अधिक लगता है पीछे उस का उतना ही अधिक फल मिलता है, जैसा रेशम कलाबतू के काम में चरखा कातने से विशेष लाभ होता है ॥

१८९ सुख और दुःख समय पाकर सब किसी को होते हैं परन्तु चतुराई उस की है जो उन के कारण पर ध्यान देकर वर्त्ताव करती है ॥

१९० सहन करने से बड़ाई मिलती है और बदला लेनें से वैरी के बराबर होना है ॥

१९१ बुद्धिमान् की साधारण बात सुनना भी शिक्षा से खाली नहीं है परन्तु जब ध्यान से सुन कर उस को काम में लाओ ॥

१९२ जब तुम किसी दूसरे पर विपत्ति देखो तो उस का कारण विचार कर आप सचेत रहो और बचने का यत्न करो ॥

१९३ बालकों या नौकरों से ऐसा ठट्ठा योग्य नहीं जो वे निर्लज्ज हो जांय और पीछे तुम्हारे साथ नटखटी करें ॥

१९४ घर के क्लेश में धन का सुख फीका हो जाता है और चिन्ता शरीर को जलाती है ॥

१९५ जो अपने नातेदार या सखी सहेलियों से ऋण लोगी तो प्रीति टूट जायगी ॥

१९६ संसार में मुंह से कहने वाले तो अनेक हैं परन्तु करके दिखाने- वाले विरले ही होते हैं ॥

१९७ कुबुद्धि की सम्पत्ति से अधर्म और अधिकार से अन्याय बढ़ता है परन्तु बुद्धिमान् के धन और ऐश्वर्य से धर्म की उन्नति होती है ॥

१९८ कठोर वचन का घाव तीर से भी अधिक होता है ॥

१९९ ओछे की प्रीति और बालू की भीति बराबर है ॥

२०० कमीनों की सङ्गति कलङ्क की रङ्गत है ॥

२०१ दूसरे घर की लड़ाई अपने घर मत डालो बरन उस की शान्ति करने का उपाय करो ॥

२०२ किसी स्त्री पुरुष या नातेदार को ख़राब जगह में देख कर कदापि मत टोको बरन इस प्रकार छिप जाओ कि मानो तुमने उस के ऐब को नहीं देखा पीछे किसी उत्तम रीति से समझा दो ॥

२०३ आपस की डाह और फूट से बैरी प्रबल होते, गै़र हंसते और अपनी हानि होती है ॥

२०४ टालने से मने करना भला है क्योंकि बहाना करना भी धोखे के बराबर है और दूसरों को आशा का क्लेश होता है ॥

२०५ साध्वी वह स्त्री है जो औरों को कुचेष्टा से बचावे और उपदेश कर के सुमार्ग में चलावे ॥

२०६ चतुरा स्त्री भलाई ग्रहण कर के बुराई छोड़ देती है जैसा शहद की मक्खी फूल से रस निकाल लेती है ॥

२०७ दुष्टा स्त्री गुण से भी दोष ही निकालती है जैसे स्तन में लगी जोंक दूध छोड़ लोहू पीती है ॥

२०८ गुणवती स्त्री परदे में भी प्रतिष्ठा पाती है जैसा मोती अथाह पानी के भीतर रहते भी ढूंढा जाता है ॥

१८६ चांदी सोने से विद्या और गुण का दहेज देना अतिश्रेष्ठ है जिस से लड़की और दामाद दोनों को जन्म भर आनन्द मिले ॥

१८७ अपनी सखी सहेलियों में बैठ कर उन के गुण सीखो और शील सन्तोष को अंगीकार करो, उन के खाने पहने की ईर्षा और कुचाल से बची रहो ॥

१८८ जिस काम के सीखने में जितना परिश्रम और समय अधिक लगता है पीछे उस का उतना ही अधिक फल मिलता है, जैसा रेशम कलाबत्तू के काम में चरखा कातने से विशेष लाभ होता है ॥

१८९ सुख और दुःख समय पाकर सब किसी को होते हैं परन्तु चतुराई उस की है जो उन के कारण पर ध्यान देकर वर्ताव करती है ॥

१९० सहन करने से बड़ाई मिलती है और बदला लेनें से वैरी के बराबर होना है ॥

१९१ बुद्धिमान् की साधारण बात सुनना भी शिक्षा से खाली नहीं है परन्तु जब ध्यान से सुन कर उस को काम में लाओ ॥

१९२ जब तुम किसी दूसरे पर विपत्ति देखो तो उस का कारण विचार कर आप सचेत रहो और बचने का यत्न करो ॥

१९३ बालकों या नौकरों से ऐसा ठट्ठा योग्य नहीं जो वे निर्लज्ज हो जांय और पीछे तुम्हारे साथ नटखटी करें ॥

१९४ घर के क्लेश में धन का सुख फीका हो जाता है और चिन्ता शरीर को जलाती है ॥

१९५ जो अपने नातेदार या सखी सहेलियों से ऋण लोगी तो प्रीति टूट जायगी ॥

१९६ संसार में मुंह से कहने वाले तो अनेक हैं परन्तु करके दिखाने-
 वाले विरले ही होते हैं ॥
१९७ कुबुद्धि को सम्पति से अधर्म और अधिकार से अन्याय बढ़ता है
 परन्तु बुद्धिमान् के धन और ऐश्वर्य से धर्म की उन्नति होती है ॥
१९८ कठोर वचन का घाव तीर से भी अधिक होता है ॥
१९९ ओछे की प्रीति और बालू की भीति बराबर है ॥
२०० कमीनों की सङ्गति कलङ्क की रङ्गत है ॥
२०१ दूसरे घर की लड़ाई अपने घर मत डालो वरन उस की शान्ति
 करने का उपाय करो ॥
२०२ किसी स्त्री पुरुष या नातेदार को खराब जगह में देख कर कदापि
 मत टोको वरन इस प्रकार छिप जाओ कि मानो तुमने उस के
 ऐब को नहीं देखा पीछे किसी उत्तम रीति से समझा दो ॥
२०३ आपस की डाह और फूट से वैरी प्रबल होते, गैर हंसते और अपनी
 हानि होती है ॥
२०४ टालने से मने करना भला है क्योंकि बहाना करना भी धोखे के
 बराबर है और दूसरों को आशा का क्लेश होता है ॥
२०५ साध्वी वह स्त्री है जो औरों को कुचेष्टा से बचावे और उपदेश
 कर के सुमार्ग में चलावे ॥
२०६ चतुरा स्त्री भलाई ग्रहण कर के बुराई छोड़ देती है जैसा शहद
 की मक्खी फूल से रस निकाल लेती है ॥
२०७ दुष्टा स्त्री गुण से भी दोष ही निकालती है जैसे स्तन में लगी
 जोंक दूध छोड़ लोहू पीती है ॥
२०८ गुणवती स्त्री परदे में भी प्रतिष्ठा पाती है जैसा मोती अथाह पानी
 के भीतर रहते भी ढूंढ़ा जाता है ॥

२२७ एक बुद्धिमान् से किसी ने बूझा कि तुम ने इतनी बुद्धि कहां पाई उस ने उत्तर दिया कि मूर्खों से, क्योंकि मैं मूर्खों की मूर्खता को टटोलता हुआ चलता हूं जिस से धोखा. न पाऊं ॥

२२८ हज़ारों मूर्खों की बात मत मानो बरन एक विद्वान् धर्म्मात्मा की शिक्षा पर चलो ॥

२२९ जैसे देश की शोभा धार्म्मिक राजा और एकता से, पुरुष की शोभा धन और विद्या से, वृक्ष की शोभा फलफूल से होती है वैसे ही स्त्री की शोभा शील और पातिव्रत से है ॥

२३० जो मा बाप सन्तान को मूर्ख रख कर धन देते हैं वह पूरे शत्रु हैं और जो गुण सिखा कर परिश्रमी बनाते हैं वह उन के बड़े हित-कारी हैं ॥

२३१ सुपुत्र एक ही कुल को प्रकाश करता है किन्तु सुशीला पुत्री से दो कुल उजागर होते हैं ॥

२३२ जब तुम किसी यात्रा के लिये परदेश को जाओ तो चोर उचक्कों और ठगों से बहुत सावधान रहो क्योंकि तनक आंख बचने से माल पराया होता है ॥

२३३ घरवालों से चुरा कर कोई चीज़ बेंचना या छिपा कर दूसरों के घर रखना बड़ी बुराई है, इस से चोरी का कलंक लगता और घर की बरकत जाती है ॥

२३४ बालकों के सामने झूंठे क़िस्से कहानी गाली सीठने और निर्लज्ज बातें कभी मत करो इस से उन की प्रकृति बिगड़ जायगी ॥

२३५ विधवा स्त्री को शृङ्गार करना या विषयक्रीड़ा के गीत गाना मानों व्यभिचार का पाठ सीखना है ॥

२३६ पांच समय पांच वस्तु याद आती हैं अर्थात् बीमारीमें आरोग्यता, कङ्गालों में धन, विपत्ति में परमेश्वर, मरने के पीछे सज्जन की भलाई और ज्ञान होने पर अपनी भूल ॥

२३० जिस किसी से कुछ औषधि कराओ उस को अप्रसन्न न करो ॥

२३८ विवाह का समय युवावस्था ही है क्योंकि उस के चिन्ह परमेश्वर आप ही लड़के लड़की में पैदा कर देता है और वर कन्या भी विद्या, योग्यता, प्रेम, गृहप्रबन्ध और शिष्टाचार की विधि अच्छे प्रकार जान लेते हैं ॥

२३६ प्रातःकाल अपने बड़े बूढ़ों और पति को प्रणाम करने के उपरान्त उन की इच्छानुसार काम करो ॥

२४० गुण सिखाने में बालकों के रोने का ध्यान मत करो किन्तु मन से दया और ऊपर से ताड़ना रखनी चाहिये ॥

२४१ गृहस्थी में उसी समय आनन्द होता है जब वालक, वृद्ध, युवा, स्त्रीपुरुष अपने २ कर्तव्य को यथोचित पूरा करें ॥

२४२ खल और सांप दोनों ही बुरे होते हैं परन्तु दुर्जन सांप से भी बुरा है क्योंकि सांप तो एक ही को काटता है परन्तु यह संसार को दुखी करता है ॥

२४३ विभव का भूषण सुजनता, शूरता का गप्प न मारना, ज्ञान का शांति, विद्या का नम्रता, धन का सुपात्र को दान देना, तप का क्रोध न करना, सामर्थ्य का क्षमा करना, धर्म का निष्कपट और शील सब का गहना है ॥

२४४ माता के घर जाकर अपनी सुसराल की बुराई करने में एक तो माता पिता को दुःख होता है और दूसरे सास सुसर का मन फट जाता है ॥

२४५ जो कोई तुम्हारा आदर न करे उस के घर कभी मत जाओ ॥

२४६ जिस प्रकार लड़कों को विद्या पढ़ाते हैं उसी प्रकार लड़कियों को भी पढ़ाना चाहिये ॥

२४७ एक अंग्रेज़ ने अपनी लड़की के किसी अपराध पर अप्रसन्न होकर कहा कि तुम्हारा विवाह किसी हिन्दू के साथ कर देंगे तब लड़की ने प्रार्थना की कि चाहे जान से मार दो परन्तु हिन्दू स्त्री मत बनाओ क्योंकि चूल्हा चक्की गोबर चरखे के सिवाय सड़े सीले दुर्गन्धयुक्त घर की कैद में रह कर भी पैर की जूती कहलाना पड़ेगा, हा शोक !!! आर्य्यनारियों के प्रति विदेशी स्त्रियों के ऐसे घृणित ख्याल हैं, हे प्रियभगिनियो ! यह लज्जा की बात हम को विद्याहीन होने से ही सुनना पड़ती है इसलिये परिश्रम कर के विद्योपार्जन करना चाहिये ॥

२४८ जिस को अपने हित की शिक्षा नहीं सुहाती उस के नाश का समय निकट ही समझो ॥

२४९ तीज त्यौहार वही करने योग्य हैं जो शास्त्रविहित और सांसारिक लाभदायक हैं ॥

२५० जो किसी को बुरे काम में सहायता देता या मने नहीं करता है वह उस के आधे पाप का भागी हो जाता है ॥

२५१ जब किसी के दुःख दर्द की ख़बर को जाओ तो उस से ऐसी वार्त्ता करो जो उस का क्लेश शांत हो और उस के साथ आप भी रो कर दुःख को मत बढ़ाओ ॥

२५२ विद्या गुण छोटी जाति से भी ग्रहण करना चाहिये जैसे कीचड़ में भी पड़ा हुआ सोना कोई नहीं छोड़ता ॥

२५३ लोगों के विरुद्ध कोई नई रीति चाहे लाभदायक भी हो प्रचार करने में थोड़े दिन बदनामी उठानी पड़ती है पीछे उस से अवश्य भलाई निकलती है ॥

२५४ जिन गहनों से शरीर को कष्ट और चित्त को शोच हो उन की इच्छा कभी मत करो, कहावत है कि "वा सोने को जारिये जिस से टूटे कान" ॥

२५५ संसार में ऐसी भलाई के काम करो जो सदा तुम्हारा चिन्ह स्थिर रहे ॥

२५६ अपने किये कर्मों का फल आप ही को भोगना पड़ता है परलोक में उस को कोई बांट नहीं सकता इसलिये दूसरों के लाभ को कोई पाप करना उचित नहीं ॥

२५७ सज्जन मनुष्य विना कहे ही दुःखियोंका दुःख दूर करते हैं, मांगने और कहनेकी बाट नहीं देखते ॥

२५८ जब पति सन्मुख आवे तो उठकर आदर करना और आसन देना उस के चरणों में दृष्टि रखना जो कुछ वे आज्ञा करें उस को नम्रता से सुनना और उस के अनुकूल चलना यह कुलवधुओं के धर्म हैं ॥

२५९ सास बहुओं की कलह से पति स्त्री और मा बेटों के चित्त भी फट जाते हैं और जिठानी दौरानियों के विरोध से भाई का वैरी भाई हो जाता है ॥

२६० एक कुबड़ी से किसी ने कहा कि यदि तेरी कमर अच्छी करदें तो कुछ भला मानेगी ? तब उसने उत्तर दिया कि जो औरों की कमर भी टेढ़ी हो जाय तो अच्छा है हा ! ईर्षा ॥

२६१ जो कोई अनहोनी असम्भव गप्प मारे जैसा कि सूर्य का धरती पर उतरना, समुद्र को सोखना, पृथ्वी को ले भागना आदि उसकी बात पर कभी मत पतियाओ ॥

बालिकाविलाप ॥

छन्द ॥

तुम बिन विकट संकट कहैं कस शरण दृष्टि न आवहीं ।
हा ! शोक बिन विद्या पढ़े कन्या महा दुःख पावहीं ॥
बालक अवस्था खेल में खोवें वृथा न पढ़ावहीं ।
सिखलाय अनुचित खेल कुत्सित संस्कार दृढ़ावहीं ॥
हा मन्दमति माता पिता निज हाथ से विष प्यावहीं ।
हा ! शोक बिन विद्या पढ़े कन्या महादुःख पावहीं ॥ १ ॥
कर प्यार अनुचित मातु पितुने हित अहित नहिं कछु गिना ।
निज मूढ़ता वश मूर्ख राखी बालिका विद्या बिना ॥
जबहीं हि स्यानी कुललजानी सास के घर जावहीं ।
हा ! शोक बिन विद्या पढ़े कन्या महादुःख पावहीं ॥ २ ॥
अति मूर्खता निधि सास दिवरानी जिठानी नहिं पढ़ीं ।
पति शठ निरक्षर श्वसुर देवर क्लेश करहीं प्रति घड़ी ॥
विद्या न जाने नारि को बहुभांति मूर्ख भ्रमावहीं ।
हा ! शोक बिन विद्या पढ़े कन्या महादुःख पावहीं ॥ ३ ॥
निज सास श्वसुरे की टहल पतिव्रत धर्म न मानहीं ।
हा बिन पढ़े शुभ बोलना गृह कार्य को नहिं जानहीं ॥
कस होहिं दृक्षा बिन सुशिक्षा काहुको न सुहावहीं ।
हा ! शोक बिन विद्या पढ़े कन्या महादुःख पावहीं ॥ ४ ॥
भर्तार हू तिहिं मूर्खता से प्रेम नहिं मन में करहिं ।
अति होहिं घर में क्लेश निशि दिन नरक निधि जीवन धरहिं ॥
पति प्रेम बिन कहुं पत नहीं अति विपति जन्म वितावहीं ।
हा ! शोक बिन विद्या पढ़े कन्या महा दुःख पावहीं ॥ ५ ॥
नित सास ससुरे ज्येष्ठ देवर की कठिन गारी सुनहिं ।
हा मात बिन हा भ्रात नित हा तापकर हिय में धुनहिं ॥
सब आश छोड़हिं शीश फोड़हिं रुधिर धार बहावहीं ।
हा ! शोक बिन विद्या पढ़े कन्या महादुःख पावहीं ॥ ६ ॥

२६२ परपुरुष से हंसी ठट्टा करना कभी न चाहिये क्योंकि यह पातिव्रत धर्म के विरुद्ध है ॥

२६३ अपने सास ससुर पति से प्रथम उठो पीछे सोओ और सोते समय घर बार के किवाड़ आदि को सावधानी से देख कर लगा दिया करो ॥

२६४ जिन पुस्तकों में अनुचित और निर्लज्जता की बातें लिखी हों लड़कियों और स्त्रियों को कभी न देखना चाहियें ॥

२६५ जो स्त्री पर पुरुष को पिता तुल्य, पराई वस्तु को मट्टी के सदृश और दूसरे जीवों को अपने प्राणतुल्य जानती है वही धर्मवती होती है ॥

२६६ तीन तरह से संतान का दुःख होता है अर्थात् न होना, हो कर मर जाना, और मूर्ख होना, इनमें पहिले से बंध्या दोष लगता, दूसरे में परिश्रम वृथा जाता है, परंतु मूर्ख सन्तान पल पल में माता पिता को क्लेश देती है ॥

२६७ नित्य आरोग्यता, धन का आगम, मीठा बोलने वाली स्त्री, आज्ञाकारी पुत्र, सच्चा मित्र और फलदायी विद्या, संसार में ये छः प्रकार के सुख हैं परन्तु सुशीला स्त्री का सुख मुख्य है ॥

२६८ जब आधे शरीर में रोग होता है तो शेष आधा भी व्याकुल रहता इसी प्रकार स्त्री की मूर्खता से पति और पति के कुलक्षणों से स्त्री दुःख पाती है क्योंकि स्त्री अपने स्वामी की अर्धाङ्गी है ॥

२६९ जब बालक बोलने और समझने लगे तो उसको बड़े छोटे माता पिता गुरु साधू राजा सेवक आदि से बोलने उनके पास बैठने और आदर करने का उपदेश माता को करना चाहिये ॥

२७० जिस कुल की स्त्रियां शोकातुर होकर दुःखी रहती हैं वह शीघ्र नष्ट होजाता है और जिस वंश की नारियां आनन्द उत्साह और प्रसन्नता से भरी रहती हैं वह सदा बढ़ता रहता है ॥

वालिकाविलाप ॥

छन्द ॥

तुम विन विकट संकट कटैं कस शरण दृष्टि न आवहीं ।
हा ! शोक विन विद्या पढ़े कन्या महा दुःख पावहीं ॥
बालक अवस्था खेल में खोवैं वृथा न पढ़ावहीं ।
सिखलाय अनुचित खेल कुत्सित संस्कार दृढ़ावहीं ॥
हा मन्दमति माता पिता निज हाथ से विष प्यावहीं ।
हा ! शोक विन विद्या पढ़े कन्या महादुःख पावहीं ॥ १ ॥
कर प्यार अनुचित मातु पितुने हित अहित नहिं कछु गिना ।
निज मूढ़ता वश मूर्ख राखी बालिका विद्या विना ॥
तबहींहि स्यानी कुलजानी सास के घर जावहीं ।
हा ! शोक विन विद्या पढ़े कन्या महादुःख पावहीं ॥ २ ॥
अति मूर्खता निधि सास दिवरानी जिठानी नहिं पढ़ीं ।
पति शठ निरक्षर श्वसुर देवर क्लेश करहीं प्रति घड़ी ॥
विद्या न छाजे नारि को बहुभांति मूर्ख भ्रमावहीं ।
हा ! शोक विन विद्या पढ़े कन्या महादुःख पावहीं ॥ ३ ॥
निज सास श्वसुरे की टहल पतिव्रत धर्म्म न मानहीं ।
हा विन पढ़े शुभ बोलना गृह कार्य को नहिं जानहीं ॥
कस होहिं दक्षा विन सुशिक्षा काहुको न सुहावहीं ।
हा ! शोक विन विद्या पढ़े कन्या महादुःख पावहीं ॥ ४ ॥
भर्तार हू तिहिं मूर्खता से प्रेम नहिं मन में करहिं ।
अति होहिं घर में क्लेश निशि दिन नरक निधि जीवन धरहिं ॥
पति प्रेम विन कहुं चन नहीं अति विपति जन्म बितावहीं ।
हा ! शोक विन विद्या पढ़े कन्या महा दुःख पावहीं ॥ ५ ॥
नित सास ससुरे ज्येष्ठ देवर की कठिन गाली सुनहिं ।
हा मात पित हा भ्रात नित हा हाथकर हिय में धुनहिं ॥
सब आश छोड़हिं शीश फोड़हिं रुधिर धार बहावहीं ।
हा ! शोक विन विद्या पढ़े कन्या महादुःख पावहीं ॥ ६ ॥

कन्या विवाहव जन्म भर घर मात पित नहिं रख सकहिं ।
निज भ्रात औ सम्बन्धीगण सब दूरते शत्रू लखहिं ॥
अति ही अनादर लहत दरदर भाग्य वश जहं जावहीं ।
हा ! शोक विन विद्या पढ़े कन्या महादुःख पावहीं ॥ ७ ॥
जिहिं भांति पुरुषन को सदा सुख हेत मन ललचात है ।
त्यों नारियां सब सुख चहैं यह नीति शास्त्र सुनात है ॥
हा पक्षपाती पुरुष को पर दुःख दृष्टि न आवहीं ।
हा ! शोक विन विद्या पढ़े कन्या महादुःख पावहीं ॥ ८ ॥
हा बिन पढ़े गुणहीन पर आधीन किहिं विध सुख लहैं ।
अब वस्त्र भोजन विन सदा कन्या कठिन संकट सहैं ॥
हा बिपति ऐसी शत्रुहू को ईश नहिं दिखलावहीं ।
हा ! शोक विन विद्या पढ़े कन्या महा दुःख पावहीं ॥ ९ ॥
हा मृत्यु दीजे शीघ्र देवी देव ईश मनावहीं ।
अति दुःख पाय निराश ह्वै विषखाय प्राण गमावहीं ॥
अथवा निलज्ज निःशंक ह्वैके कुल कलंक लगावहीं ।
हा ! शोक विन विद्या पढ़े कन्या महादुःख पावहीं ॥ १० ॥
हा हाय निश दिन करहिं छिन छिन नैनन नीर बहावहीं ।
मन शोक अग्नि अखंड जरही बंश ध्वंस करावहीं
सब सभ्य जन यह देख दुर्गति टुक दया नहिं लावहीं ।
हा ! शोक विन विद्या पढ़े कन्या महादुःख पावहीं ॥ ११ ॥
हा एक दिन इन नारियों को सब जगत् पूजत रह्यो ।
सो नारि अति विपता सहत अब हाय वह दिन कित गयो ॥
जो राज्य सम सुख भोगतीं दुख सिन्धु में बिल्लावहीं ।
हा ! शोक बिन विद्या पढ़े कन्या महादुःख पावहीं ॥ १२ ॥
सब शास्त्र औ शुभ वेद देखहु सत्य सत्य बतावहीं ।
नारी सुखी ज्यहिं वंश में सो कुल सदा सुख पावहीं ॥
ज्यहि वंश में अवला दुखी सो वंश शीघ्र नाशवहीं ।
हा ! शोक विन विद्या पढ़े कन्या महादुःख पावहीं ॥ १३ ॥

हा आप के देखत सदा अर्द्धांगनी अति दुख भरैं ।
तुम अनादर करन लागे और की आदर करैं ॥
कहुं जगत में कोउ नाहिं ऐसो उनहि न आदर भावहीं ।
हा ! शोक बिन विद्या पढ़े कन्या महादुःख पावहीं ॥ १४ ॥
जिहिं नारि बिन जीते न छिन नर नित अमित दुःख पावहीं ।
नहि नारि बिन भर्त्तार शुभ सन्तान मान न पावहीं ॥
हा सर्व सुख की खानि अब दुःख खानि में अकुलावहीं ।
हा ! शोक बिन विद्या पढ़े कन्या महादुःख पावहीं ॥ १५ ॥
सुख दुःख सम्पति विपति में सब भांति संग निभावनी ।
सर्वस्व अपना तुमहि जानहिं तुम बिना हतभागनी ॥
हा अति निठुर पति होय बैठे अक्षरों न सिखावहीं ।
हा ! शोक बिन विद्या पढ़े कन्या महा दुःख पावहीं ॥ १६ ॥
जिन के बिना माता पिता हत भाग अपने को गिनें ।
हा सोइ सन्तति आप के देखत सदा झींमें भुनें ॥
हा मात पित बैरी भये नहिं नीति धर्म्म सिखावहीं ।
हा ! शोक बिन विद्या पढ़े कन्या महा दुःख पावहीं ॥ १७ ॥
निज शक्ति के अनुसार सब धन देहिं कन्या को सदा ।
बहु वस्त्र भूषण विभव भूमी दान दे करते विदा ॥
विद्या बिना यह दान निष्फल वेद शास्त्र सुनावहीं ।
हा ! शोक बिन विद्या पढ़े कन्या महादुःख पावहीं ॥ १८ ॥
शुभ भ्रात भगनी जगत् में दुर्लभ्य नेह निभावहीं ।
हा भ्रातहू नहिं हरत संकट शास्त्र नाहिं पढ़ावहीं ॥
हा देव सब कृपा करहिं कन्या कौन केहिग जावहीं ।
हा ! शोक बिन विद्या पढ़े कन्या महा दुःख पावहीं ॥ १९ ॥
शुभ सन्त साधू वेष धारी जगत् गुरु कहलावहीं ।
सब हाय सो भी पाप रति पतिव्रत्य धर्म्म गमावहीं ॥
घर फूट पद धन धर्म्म नाशहि सोइ सीख सिखावहीं ।
हा ! शोक बिन विद्या पढ़े कन्या महादुःख पावहीं ॥ २० ॥